



गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

गुजरातकेन्द्रीयविश्वविद्यालय

(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009के तहत स्थापित)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

डॉ. सुनील कुमार शर्मा

जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

F.No.PRO/30

03rd February 2024

Greetings from Central University of Gujarat

विकसित भारत के लिए ज्ञान परंपरा के भारतीय मॉडल की आवश्यकता

“भारतीय ज्ञान परंपराएँ: संचार और महत्व” विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह में वक्ताओं ने प्रस्तुत किया संबोधन

गांधीनगर।तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शनिवार का समापन हुआ। देशभर से आए शोधार्थियों, शिक्षकों और विशेषज्ञों ने संगोष्ठी में आयोजित हुए विभिन्न सत्रों में अपने विचार साझा किए। समापन समारोह में शामिल हुए गुरु घासीदास यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने बतौर मुख्य अतिथि कहा कि मनुष्य को कभी भी खुद को बड़ा बताने व दूसरों को छोटा नहीं बताना चाहिए। पश्चिम के देशों ने भारत को हमेशा कमतर ज्ञानवान समझने की भूल की है। उन्होंने अर्थशास्त्र के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हमें फादर ऑफ इकोनॉमिक्स पर एडम स्मिथ याद है, लेकिन भारत में अर्थशास्त्र की पूर्ण जानकारी कौटिल्य अपनी पुस्तक में कई वर्षों पहले ही दे चुके है। उन्होंने कहा कि हमें अब भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े पुराने साहित्य को ही नहीं अपितु नवीन साहित्य जो भारतीय ज्ञान परंपरा के वैभव को दर्शाता है उसे भी आत्मसात करना चाहिए। भारत अब दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। पूरे विश्व का 48 फीसदी ऑनलाइन लेनदेन अकेले भारत में हो रहा है। इस दौरान विशिष्ट अतिथि ऑर्गनाइजर पत्रिका के संपादक प्रफुल्ल केतकर ने कहा कि वर्तमान में देश में एक बड़ी बहस छिड़ी हुई है कि मंदिर के निर्माण से रोजगार नहीं मिल सकता, लेकिन सदियों से हमारे भारतवर्ष में मंदिर और रोजगार साथ-साथ चले है।लेकिन हालांकि 70 वर्षों में हमारी अप्रोच सही नहीं रही हैं। भारत ही अकेली ऐसी सभ्यता है जो 1300 वर्षों तक आक्रमण और अत्याचार सहने के बाद भी लगातार उठ खड़ी हुई है। हमें अब विकास के लिए अमेरिकी मॉडल नहीं अपितु भारतीय मॉडल की जरूरत है। उन्होंने विकसित भारत के लिए ज्ञान परंपरा के भारतीय मॉडल की आवश्यकता पर जोर दिया। समापन सत्र के मुख्य वक्ता जेएनयू दिल्ली के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के प्रो.अश्विनी महापात्र ने कहा कि देश पश्चिमी सोच से हमें अब बाहर निकलने की जरूरत है। हमें गुलामी की मानसिकता से बाहर आना होगा। हमें कहां नेतृत्व करना है? ये मुख्यबिंदु है। हमारे इतिहास में छेड़छाड़ करके पश्चिम ने हमें हमारे गौरवशाली इतिहास से दूर रखने की कोशिश की है, लेकिन वास्तविकता यह है कि जो हमारे पास समृद्धज्ञान परंपरा है वो किसी के पास नहीं है।

सनातन संस्कृति के मूल भावों को आत्मसात करते हुए मिले शिक्षा



एक ब्रह्म स्वधर्म की ओर

सेक्टर-29, गांधीनगर-382030,फोननं.- 07923977407,फेक्स-07923260076

Sector-29, Gandhinagar, Phone No.8963840032, Fax-07923260076

Email: pro@cug.ac.in, website: www.cug.ac.in



15 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA



गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

गुजरातकेन्द्रीयविश्वविद्यालय

(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009के तहत स्थापित)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

डॉ. सुनील कुमार शर्मा

जनसंपर्क अधिकारी

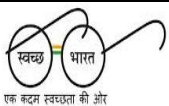
By Speed Post/By Email/By Hand

कार्यक्रम का अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमाशंकर दूबे ने कहा कि ज्ञान का सर्वप्रथम उद्भव ही भारत में हुआ है। भारतीय ग्रंथों ने विश्व को ज्ञान दिया। भारतीय ज्ञान परंपरा में भौतिकता और आध्यात्मिकता का अद्भुत संगम है। मनुष्य में शरीर, मन, बुद्धि के साथ पर्यावरण का बेहतर सामंजस्य है। आज आवश्यकता है कि हम शिक्षण संस्थानों में छात्र-छात्राओं को सनातन संस्कृति के मूल भावों को आत्मसात करते हुए शिक्षा दें। उन्होंने कहा कि छात्रों में देश प्रेम की भावना का विकास करना शिक्षा का मूल उद्देश्य है, क्योंकि सबसे बड़ी भक्ति राष्ट्र भक्ति है। शिक्षक को छात्रों में राष्ट्रीयता की भावना विकसित करनी होगी। भारतीय ज्ञान परंपरा में भौतिक भाव के साथ आध्यात्मिक भाव दोनों हैं। भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता का अद्भुत संगम भारतीय ज्ञान परंपरा में ही देखने को मिलता है। आज आवश्यकता है, हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम भारतीय मूल्यों को पाठ्यक्रमों में जोड़ा जाए ताकि विद्यार्थियों में देश प्रेम की भावना का विकास किया जा सके। साथ ही हमें हमारे धर्मग्रंथों की तरफ लौटना होगा। इस दौरान कार्यक्रम के संयोजक प्रो. अतनु महापात्र ने बताया कि तीन दिवसीय इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में 230 से अधिक एब्सट्रैक्ट प्राप्त हुए हैं। साथ ही 180 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गये हैं।

Need for the Indian Model of Knowledge Tradition for Developed India

In the valedictory ceremony of the three-day international conference on the "Indian Knowledge Traditions: Continuity and Significance," speakers presented their addresses.

Gandhinagar. The conclusion of the three-day international conference was held. Scholars, teachers, and experts from all over the country shared their thoughts in various sessions organized during the conference. In the concluding ceremony, the Chief Guest, Prof. Alok Kumar Chakrawal, Vice-Chancellor of Guru Ghasidas University, said that one should never consider oneself superior and others inferior. Western countries have always underestimated India's knowledge. Providing information about economics, he said that we remember Adam Smith as the Father of Economics, but Chanakya had already provided complete knowledge of economics in his book. He said that now we should not only revive the old literature associated with Indian knowledge tradition but also assert the new literature that showcases the glory of Indian knowledge tradition. India has now become the world's third-largest economy. 48% of the world's online transactions are happening in India alone. During this time, the special guest and the Editor of organizer magazine, Prof. Prafull Ketkar said that there is a big debate in the country that



एक कदम स्वच्छता की ओर

सेक्टर-29, गांधीनगर-382030, फोन नं.- 07923977407, फेक्स-07923260076

Sector-29, Gandhinagar, Phone No.8963840032, Fax-07923260076

Email: pro@cug.ac.in, website: www.cug.ac.in



150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA



गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

गुजरातकेन्द्रीयविश्वविद्यालय

(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009के तहत स्थापित)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

employment cannot be generated by building temples, but for centuries, in our India, temples and employment have gone hand in hand. However, in the last 70 years, our approach has not been correct. India alone is a civilization that, even after enduring invasion and oppression for 1300 years, has consistently risen. We need not the American model but the Indian model for development. He emphasized the need for the Indian model of knowledge tradition for the development of India. The chief speaker of the concluding session of the program, Prof. Aswini Mohapatra, Professor, School of International Studies, JNU Delhi, said that we need to move away from Western thinking to emerge now. We need to come out of the mentality of slavery. Where we need to lead is the main point. Westerners have tried to keep us away from our glorious history by interfering in our history, but the reality is that what we have in our possession, a rich knowledge tradition, no one else has.

Education that Internalizes the Core Values of Ancient Indian Culture

While presenting the presidential address, the Vice-Chancellor of the university, Prof. Rama Shanker Dubey, said that knowledge originated first in India. Indian scriptures have imparted knowledge to the world. The Indian tradition of knowledge is a wonderful confluence of materialism and spirituality. There is a better harmony between the body, mind, intellect, and the environment in humans. Today, there is a need to provide education in educational institutions by internalizing the core values of ancient Indian culture among students. He said that developing a sense of patriotism among students is the aim of education, as the greatest devotion is devotion to the nation. Teachers need to develop a sense of nationalism among students. In the Indian tradition of knowledge, there is both physical and spiritual orientation. The wonderful confluence of spirituality with materialism is seen only in the Indian tradition of knowledge. Today, it is necessary that through the National Education Policy 2020, this path is shown, so that Indian values are integrated into our curriculum, and the feeling of patriotism is developed among students. We need to return to our religious scriptures. During this program, the coordinator, Prof. Atanu Mohapatra, informed that more than 230 abstracts were received in the three-day international conference. In addition, more than 180 research papers were presented.



एक वचन स्वच्छता की ओर

सेक्टर-29, गांधीनगर-382030, फोन नं.- 07923977407, फेक्स-07923260076
Sector-29, Gandhinagar, Phone No.8963840032, Fax-07923260076
[Email: pro@cug.ac.in](mailto:pro@cug.ac.in), [website: www.cug.ac.in](http://www.cug.ac.in)



150
YEARS OF
CELEBRATING
THE MAHATMA



ગુજરાત કેન્દ્રીય વિશ્વવિદ્યાલય
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

ગુજરાતકેન્દ્રીયવિશ્વવિદ્યાલય

(ભારત કી સંસદ કે અધિનિયમ સં. 25, 2009કે તહત સ્થાપિત)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

ડૉ. સુનીલ કુમાર શર્મા
જનસંપર્ક અધિકારી

By Speed Post/By Email/By Hand

વિકસિત ભારત માટે જ્ઞાન પરંપરાના ભારતીય મોડેલની જરૂર છે

“ભારતીય જ્ઞાન પરંપરાઓ: સંચાર અને મહત્વ” વિષય પર ત્રણ દિવસીય આંતરરાષ્ટ્રીય પરિષદના સમાપન સમારોહમાં વક્તાઓએ સંબોધન કર્યું

ગાંધીનગર.ત્રિ દિવસીય આંતરરાષ્ટ્રીય સેમિનારનું શનિવારે સમાપન થયું હતું. સેમિનારમાં આયોજિત વિવિધ સત્રોમાં દેશભરના સંશોધકો, શિક્ષકો અને નિષ્ણાતોએ પોતાના મંતવ્યો રજૂ કર્યા હતા. સમાપન સમારોહમાં ઉપસ્થિત ગુરુ ધાસીદાસ યુનિવર્સિટીના વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો.

આલોક કુમાર ચક્રવાલે જણાવ્યું હતું કે માણસે ક્યારેય પોતાને મોટો ન કહેવો જોઈએ અને બીજાને નાનો કહેવા ન જોઈએ. પશ્ચિમી દેશોએ હંમેશા ભારતને ઓછું જાણનાર માનવાની ભૂલ કરી છે. અર્થશાસ્ત્ર વિશે માહિતી આપતાં તેમણે કહ્યું કે આપણે એડમ સ્મિથને અર્થશાસ્ત્રના પિતા તરીકે યાદ કરીએ છીએ, પરંતુ કૌટિલ્યએ તેમના પુસ્તકમાં વર્ષો પહેલા ભારતમાં અર્થશાસ્ત્ર વિશે સંપૂર્ણ માહિતી આપી હતી. તેમણે કહ્યું કે હવે આપણે માત્ર ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા સાથે સંબંધિત જૂના સાહિત્યને જ નહીં પરંતુ ભારતીય જ્ઞાન પરંપરાની ભવ્યતા દર્શાવતું નવું સાહિત્ય પણ આત્મસાત કરવું જોઈએ. ભારત હવે વિશ્વની ત્રીજી સૌથી મોટી અર્થવ્યવસ્થા બની ગયું છે. વિશ્વના 48 ટકા ઓનલાઈન વ્યવહારો એકલા ભારતમાં થાય છે. આ દરમિયાન અતિથિ વિશેષ આયોજક મેગેઝીનના તંત્રી પ્રફુલ્લ કેતકરે જણાવ્યું હતું કે હાલમાં દેશમાં એક મોટી ચર્ચા ચાલી રહી છે કે મંદિરનું નિર્માણ રોજગાર આપી શકતું નથી, પરંતુ આપણા ભારતમાં સદીઓથી મંદિરો અને રોજગાર એક સાથે ચાલ્યા છે. છેલ્લા 70 વર્ષમાં આ અભિગમ યોગ્ય નથી. ભારત એક



एक मटम स्वघना की ओर

સેક્ટર-29, ગાંધીનગર-382030, ફોનનં.- 07923977407, ફેક્સ-07923260076

Sector-29, Gandhinagar, Phone No.8963840032, Fax-07923260076

Email: pro@cug.ac.in, website: www.cug.ac.in





ગુજરાત કેન્દ્રીય વિશ્વવિદ્યાલય
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

ગુજરાતકેન્દ્રીયવિશ્વવિદ્યાલય

(ભારત કી સંસદ કે અધિનિયમ સં. 25, 2009કે તહત સ્થાપિત)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

ડૉ. સુનીલ કુમાર શર્મા

જનસંપર્ક અધિકારી

By Speed Post/By Email/By Hand

માત્ર એવી સંસ્કૃતિ છે જે 1300 વર્ષ સુધી આક્રમણ અને અત્યાચાર સહન કર્યા પછી પણ સતત ઉભી રહી છે. આપણે વિકાસ માટે અમેરિકન મોડલની નહીં પણ ભારતીય મોડલની જરૂર છે. તેમણે વિકસિત ભારત માટે જ્ઞાન પરંપરાના ભારતીય મોડલની જરૂરિયાત પર ભાર મૂક્યો હતો. કાર્યક્રમના સમાપન સત્રના મુખ્ય વક્તા, JNU દિલ્હીની સ્કૂલ ઓફ ઇન્ટરનેશનલ સ્ટડીઝના પ્રો. અશ્વિની મહાપાત્રાએ જણાવ્યું હતું કે આપણે હવે દેશની પશ્ચિમી વિચારસરણીમાંથી બહાર આવવાની જરૂર છે. આપણે ગુલામીની માનસિકતામાંથી બહાર આવવું પડશે. આપણે ક્યાં દોરી જવું એ મુખ્ય મુદ્દો છે. પશ્ચિમે આપણા ઇતિહાસ સાથે છેડછાડ કરીને આપણને આપણા ગૌરવશાળી ઇતિહાસથી દૂર રાખવાનો પ્રયાસ કર્યો છે, પરંતુ વાસ્તવિકતા એ છે કે આપણી પાસે જેટલી સમૃદ્ધ જ્ઞાન પરંપરા છે તે કોઈની પાસે નથી.

સનાતન સંસ્કૃતિના પાયાના મૂલ્યોને આત્મસાત કરતા શિક્ષણ

કાર્યક્રમના અધ્યક્ષીય પ્રવચનમાં યુનિવર્સિટીના કુલપતિ પ્રો. રમાશંકર દુબેએ કહ્યું હતું કે જ્ઞાનની ઉત્પત્તિ સૌપ્રથમ ભારતમાં થઈ હતી. ભારતીય ગ્રંથોએ વિશ્વને જ્ઞાન આપ્યું. ભારતીય જ્ઞાન પરંપરામાં ભૌતિકવાદ અને આધ્યાત્મિકતાનો અદ્ભુત સંગમ છે. મનુષ્યમાં શરીર, મન અને બુદ્ધિ સાથે પર્યાવરણની વધુ સારી સંવાદિતા છે. આજે જરૂર છે કે આપણે શૈક્ષણિક સંસ્થાઓમાં વિદ્યાર્થીઓને સનાતન સંસ્કૃતિના મૂળભૂત મૂલ્યોને આત્મસાત કરીને શિક્ષણ આપવું જોઈએ. તેમણે કહ્યું કે શિક્ષણનો ઉદ્દેશ્ય વિદ્યાર્થીઓમાં દેશભક્તિની ભાવના કેળવવાનો છે, કારણ કે સૌથી મોટી ભક્તિ દેશભક્તિ છે. શિક્ષકે વિદ્યાર્થીઓમાં રાષ્ટ્રવાદની ભાવના કેળવવાની હોય છે. ભારતીય જ્ઞાન પરંપરામાં ભૌતિક સંવેદનાની સાથે સાથે



एक मटम स्वधर्म की ओर

સેક્ટર-29, ગાંધીનગર-382030, ફોનનં.- 07923977407, ફેક્સ-07923260076

Sector-29, Gandhinagar, Phone No.8963840032, Fax-07923260076

Email: pro@cug.ac.in, website: www.cug.ac.in



150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA



ગુજરાત કેન્દ્રીય વિશ્વવિદ્યાલય
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

ગુજરાતકેન્દ્રીયવિશ્વવિદ્યાલય

(ભારત કી સંસદ કે અધિનિયમ સં. 25, 2009કે તહત સ્થાપિત)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

ડૉ. સુનીલ કુમાર શર્મા
જનસંપર્ક અધિકારી

By Speed Post/By Email/By Hand

આધ્યાત્મિક ભાવના પણ છે. ભૌતિકવાદ સાથે આધ્યાત્મિકતાનો અદ્ભુત સંગમ ભારતીય જ્ઞાન પરંપરામાં જ જોવા મળે છે. આજે રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ 2020 દ્વારા આપણા અભ્યાસક્રમમાં ભારતીય મૂલ્યો ઉમેરવાની જરૂર છે જેથી વિદ્યાર્થીઓમાં દેશભક્તિની ભાવનાનો વિકાસ થાય. આપણે આપણા શાસ્ત્રો તરફ પાછા ફરવાનું છે. આ દરમિયાન કાર્યક્રમના સંયોજક પ્રો. અતનુ મહાપાત્રાએ જણાવ્યું હતું કે ત્રણ દિવસીય આંતરરાષ્ટ્રીય કોન્ફરન્સમાં 230 થી વધુ એબ્સ્ટ્રેક્ટ મળ્યા હતા. તેમજ 180 થી વધુ સંશોધન પત્રો રજૂ કરવામાં આવ્યા છે.



एक कदम स्वच्छता की ओर

सेक्टर-29, गांधीनगर-382030, फोन नं.- 07923977407, फेक्स-07923260076
Sector-29, Gandhinagar, Phone No.8963840032, Fax-07923260076
[Email: pro@cug.ac.in](mailto:pro@cug.ac.in), [website: www.cug.ac.in](http://www.cug.ac.in)



150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA



गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

गुजरातकेन्द्रीयविश्वविद्यालय

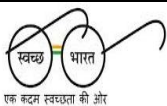
(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009के तहत स्थापित)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand



एक कदम स्वच्छता की ओर

सेक्टर-29, गांधीनगर-382030, फोन नं.- 07923977407, फेक्स-07923260076

Sector-29, Gandhinagar, Phone No.8963840032, Fax-07923260076

Email: pro@cug.ac.in, website: www.cug.ac.in





गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

गुजरातकेन्द्रीयविश्वविद्यालय

(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009के तहत स्थापित)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

With regards,
Your Truly,

Sunil sharma

Dr. Sunil Kumar Sharma
Public Relations Officer
Central University of Gujarat,
Sector-29, Gandhinagar,
Gujarat, India-382030
+918963840032
Email Id – pro@cug.ac.in
Web www.cug.ac.in
Don't print unless it's necessary.... Let's save environment.



सेक्टर-29, गांधीनगर-382030, फोन नं.- 07923977407, फेक्स-07923260076
Sector-29, Gandhinagar, Phone No.8963840032, Fax-07923260076
[Email: pro@cug.ac.in](mailto:pro@cug.ac.in), [website: www.cug.ac.in](http://www.cug.ac.in)

